जनजातीय कलाकारों ने आंध्र, छग, झारखंड की पारंपरिक तकनीकों का किया प्रदर्शन

मानव संग्रहालय

सिटी रिपोर्टर . भोपाल

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय ने शुक्रवार को आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड के लोक और जनजातीय कलाकारों ने पारंपरिक तकनीकी ज्ञान का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के अंतिम दिन स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर के निदेशक प्रो. कैलासा राव एम ने आंध्रप्रदेश के सुन्नापुवत्ती (चूना बनाने की भट्टी), छत्तीसगढ़ की तिरही (तेल निकालने का उपकरण) और झारखंड राज्य की मेढ़हट्ट कुट्टी (लोहा गलाने की भट्टी) के पारंपरिक तकनीकी के देशज उपकरण से प्राप्त किए जा रहे सामग्री का अवलोकन किया।

चूना बनाने की चक्की भी चलाई और सभी उपकरणों की तकनीकी को परम्परिक कलाकारों से सवांद करके समझा। मानव संग्रहालय की प्रसंशा की और कहा कि दर्शकों को सरल समाजों के बौद्धिक और रचनात्मक कौशल को समकालीन जगत के तकनीक वैभव में पारम्परिक तकनीक की महत्वपूर्ण भूमिका से नकार नहीं सकते।

यह देशज तकनीक नए स्टार्टअप स्थापित करने का प्रवेश द्वार हो सकता है। कार्यक्रम में संग्रहालय के निदेशक प्रोफेसर अमिताभ पांडे ने बताया कि आधुनिक तकनीक पर्यावरण को नुकसान पहुंचा सकती है, लेकिन सदियों तक लोगों के निर्वाह करने वाले पर्यावरण के अनुरूप तकनीकों का आविष्कार किया, वो आज भी प्रासंगिक है। आज भी जिसे हम पारंपरिक ज्ञान कहते हैं वह वास्तव में वैज्ञानिक तर्क पर आधारित है।